प्रेस विज्ञप्ति

आज दिनांक 17 नवम्बर, 2016 को पूर्वह्न 10:00 बजे किंग जार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय के कलाम सेंटर में दो दिवसीय National Seminar on Transforming Clinical Nursing From Tradition-based to an "Evidence-Based Practice" का शुभारम्भ हुआ। यह संगोष्ठी चिकित्सा विश्वविद्यालय के इंस्टीट्यूट ऑफ नर्सिंग द्वारा आयोजित किया गया है। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि चिकित्सा विश्वविद्यालय के कुलपति पद्मश्री प्रो0 रवि कांत जी एवं गेस्ट ऑफ आनर सुश्री राधा सैनी एम0एस0सी0 नर्सिंग,शोधार्थी य0आई0सी0सी0 जेनेवा, प्रो0 जे0वी0 सिंह, अधिष्ठाता नर्सिंग संकाय, प्रो0 रजिव गर्ग, डॉ0 समीर गुप्ता इत्यादि अधिकारीगण उपस्थित रहे। इसमें केजीएमयू इंस्टीट्यूट ऑफ नर्सिंग की विद्यार्थियों के साथ अन्य संस्थान के विद्यार्थियों ने भी प्रतिभाग किया गया।

कार्यक्रम में सुश्री राधा सैनी ने कहा सभी डॉक्टर्स की सफलता का श्रेय नर्सेस को भी जाता है क्योकिं जब कोई डॉक्टर अंतरंग रोगी को जब दवा लिखता है या कोई सर्जन जब किसी मरीज का शल्यचिकित्सा कर देता है तो मरीज उसके बाद नर्सेस के हवाले हो जाते है और उसका उपचार फिर नर्सेस द्वारा किया जाता है। इस प्रकार हम कह सकते है कि डॉक्टर की स्ट्रेंथ नर्स है। जो कार्य भारत में एक एम0डी0 डॉक्टर कर रहा है वो ही कार्य अमेरिका में एक नर्स कर रही है। वहा पर अलग–अलग विभागों में नर्सो को सुपर स्पेशियलिटी का प्रशिक्षण दिया जाता है जैसे न्यूरो की नर्स, अंको की नर्स आदि की प्रमाणीत नर्से होती है। अगर हम यू0एस0ए0 में किसी मरीज को ब्लड निकालना हो और उसे दो बार सुई से पिक करते है तो वो मरीज कहता है कि हम तुम्हे कोर्ट मे देख लेंगे। इस प्रकार हमे अपने रिसर्च और शोधो को साक्ष्य के आधार पर करना चाहिए।

कार्यक्रम में प्रो0 जे0वी0 सिंह ने कहा इस इंस्टीट्यूट को चलते हुए एक वर्ष हो चुका है। यहा पर हम नर्सो को साक्ष्य के आधार पर ही ट्रेनिंग उपलब्ध कराते है। हमारा के0जी0एम0यू0 इंस्टीट्यूट ऑफ नर्सिंग के0जी0एम0यू0 के नाम के अनुरूप प्रशिक्षण कराता है। हम इस संस्थान मे स्नातक, परास्नातक और टी0जी0 स्टूडेंट को भी प्रशिक्षण दे रहे हैं। इस संस्थान को के0जी0एम0यू0 अपने संसाधनो से ही चला रहा है।

कार्यक्रम मे चिकित्सा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रवि कांत जी ने साक्ष्य पर अधारित शिक्षा का मतलब समाझाते हुए कहा कि यह ब्यक्तिगत नैदानिक विशेषज्ञता और बाहरी सबूत को एकीकृत करना है। मरीजो को लक्षणों के आधार पर उसका क्लिनीकल जांच पैथोलॉजी की जांचे आदि कराने के बाद जो परिणाम आता है उससे हम यह निर्धारित कर सकते है कि मरीज को क्या उपचार उपलब्ध कराना चाहिए।